वर्तमान, भूत, भविष्य की समीक्षा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

हमारे सामने तीन काल हैं–वर्तमान, भूत और भविष्य। वर्तमान में जीने वाला भाव क्रिया करता है। अपना हर कार्य समय से करता है। समय का नियोजन होना चाहिए। भाव क्रिया मुक्ति का सबसे बड़ा स्रोत है। कल कभी नहीं आता। जो समय है उसी का नियोजन करके कार्य करना चाहिए। जीवन आयुष्य कर्म के अधीन है। एक–एक क्षण का उपयोग करना चाहिए। व्यवहार जगत पुण्य–पाप का चिट्ठा है। वर्तमान की समीक्षा करनी चाहिए। हमने जीवन में क्या खोया, क्या पाया? किसके साथ मैंने जैसा व्यवहार किया है सबसे क्षमा याचना करनी चाहिए।

सोने से पूर्व अवश्य क्षमा याचना कर लेनी चाहिए। गलती को सुधारने का प्रयास करना चाहिए। वर्तमान का जो क्षण बीत गया वह भूतकाल हो गया। वर्तमान का किया हुआ कार्य संचित होकर भूत बन जाता है। यही प्रारब्ध हो जाता है। वर्तमान में रहते हुए भूत की समीक्षा करनी चाहिए। मन कल्पना करता है, कल्पना के बिना योजना नहीं बन पाती। भाव क्रिया के साथ संचित कर्म की स्मृति होनी चाहिए। हमने किसके साथ अच्छा बर्ताव किया और किसके साथ बुरा बर्ताव किया इस पर चिन्तन करना चाहिए। इसे सुधारने के लिए सामायिक, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और आलोचना का विधान किया गया है। आलोचना के द्वारा भूतकाल के दोषों का प्रतिक्रमण किया जा सकता है।

मानव व्यवहार जगत में जीवनयापन करता है। उसको समय–समय पर समीक्षा करनी चाहिए। उसको समीक्षा कर यह जानना चाहिए कि मैं कौन हूॅ? मैं कहां से आया हूॅ? मैं कहॉ जाऊंगा? इन तीनों प्रश्नों के उत्तर में सब कुछ समाया हुआ है। मानव जीवन बहुमूल्य है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है कि–

बड़े भाग्य मानुष तन पावा,
सूर नर मुनि सद्ग्रन्थन गावा।

मानव का शरीर साधन–धाम और मोक्ष का द्वार है। जीवन और जगत की दृष्टि से इसका बहुत मूल्य है। शरीर यदि स्वस्थ रहता है तभी सभी प्रकार की धार्मिक क्रियाएं की जा सकती हैं। मानव जीवन को केवल कोरा स्वप्न ही नहीं कहा जा सकता। दार्शनिक दृष्टि से वर्तमान का अस्तित्व अनुभवगम्य नहीं है। हम या तो अतीत में जीते हैं अथवा भविष्य में रहते हैं। प्रत्येक क्षण अतीत बनता जाता है। भविष्य को हम वर्तमान बनाते रहते हैं। हमारे जीवन के आगे–पीछे मृत्यु का साम्राज्य रहता है। सुबह होती है, शाम होती है, उम्र इसी तरह बीतती जाती है। जब अन्त समय आता है तब ऐसा लगता है कि इतने वर्षों का समय कितनी जल्दी व्यतीत हो गया। इतने वर्षों पहले होने वाला बाल्यकाल कल जैसी घटना लगती है। सब कुछ सीनेमा दृश्य की तरह आँखों के सामने नाचने लगता है। ऐसा लगता है कि सब कुछ स्वप्न था।

जीवन के सुख–दुःखों की स्मृति स्वप्न के सुखद–दुःखद अनुभवों की भांति शेष रह जाती है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मानव जीवन समस्त अनुभव स्पप्न मात्र हैं। जीवन में जाग्रतावस्था और स्पप्नावस्था दोनों अवस्थाएं रहती हैं। मनुष्य इस सष्टि का सर्वोत्तम प्राणी है। वह एक ऐसा प्राणी है जो खुलकर अपने विचार व्यक्त कर सकता है। अपने हांथ–पांव, बुद्धि–विवेक का इस्तेमाल कर सकता है। विश्व में जितनी भी कलाकृतियां हैं और जितनी भी संरचनाएं हैं, वे समस्त मानव के इन हाथों की ही देन हैं। ये कलाकृतियां सृजनहार की सृजनशीलता को सार्थक करती हैं।

मनुष्य के क्रियाकलाप को देखकर यह सोचना स्वाभाविक है कि एक छोटा सा जीव इतना शक्तिशाली कैसे बना? मावन विश्व के प्रत्येक पदार्थ को अपने लिए उपयोगी बना लेता है। बड़े–ड़ि हिंसक जीवों को भी वश में कर लेता है। शेर और चीता जैसे जानवरों को अपने ईशारे पर नचा देता है हाथी जैसे विशालकाय जीव को एक इंच के अंकुश से वश मतें कर लेता है। क्षुब्ध अथाह सागर की ऊॅची लहरों को चीरते हुए जलयान द्वारा एक देश से दूसरे देश की यात्रा कर लेता है। न जाने ऐसे कितने आश्चर्य के कार्यों को करके अपने हौंसले को बुलन्द रखता है।

मानव का असली पक्ष उसकी बौद्धिकता है। बौद्धिकता जहां उसको अन्य प्रणियों से पृथक करती है, वहीं आकाश जैसी ऊँची ऊंचाइयों को छूने के लिए विवश करती है। बौद्धिकता मनुष्य को विश्लेषणात्मक बना देती है। विश्लेषण द्वारा वह वस्तु का वैज्ञानिक विश्लेषण करता है। वह अपने लाभ के लिए कभी–कभी केवल अन्य व्यक्ति की हानि करे आनन्दित होने के लिए बड़े से बड़ा पाप कर्म कर डालता है। रिश्वत, चोरी, हत्या, भ्रष्टाचार, लूट खसोट और अपहरण जैसे घृणित कार्यों को कराने में भी हनहीं हिचकता। इसी मनुष्य की बौद्धिकता एक ओर उसे रचनात्मक प्रेरणा देती है तो दूसरी ओर उसको विखण्डन और विनास के प्रति प्रेरित करती हैं। कभी–कभी अपने दुराचरण से मनुष्य पशु को भी पीछे छोड़ देता है। इस प्रकार मानव जीवन में बहुत कुछ खोता है और बहुत कुछ प्राप्त भी करता है। ये सब भौतिक जीवन से सम्बन्धित वस्तुएं हैं। जो जैसा कर्म करता है उसको वैसा फल भोगना पड़ता है। समय आने पर कर्म अपना फल अवश्य देता है।